मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 7 जुलाई 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

नई दिल्ली में पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन 2

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवीनतम प्रकाशन 3

प्रतिलिप्यधिकार एवं प्रकाशन पर संगोष्ठी 4

कोलकाता में साहित्य महोत्सव 4

ट्रस्ट-निदेशक बाल साहित्य के एशियाई महोत्सव सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त 5

'उत्तराखंड की राजस्व पुलिस व्यवस्था' पुस्तक का लोकार्पण 5

पुस्तक समीक्षा 6

पूर्वाभिमुखीकरण कार्यक्रम 7

श्रद्धांजलि 7

तीन भाषाओं की सलाहाकार समितियों की बैठकें 8

चिट्ठीघर 8

नवीनतम प्रकाशन

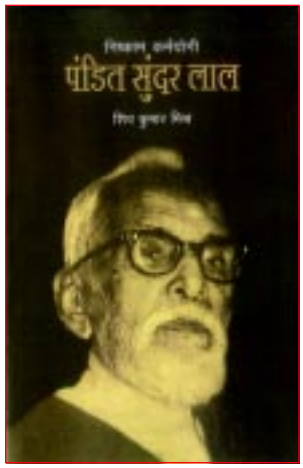

निष्काम कर्मयोगी पंडित सुंदर लाल

शिव कुमार मिश्र

पृ. 258 ` 135

श्रीनगर पुस्तक मेला

"राज्य के आम लोगों में पुस्तक पठन आदत की दिशा में श्रीनगर पुस्तक मेला एक स्वागत योग्य कदम है।" जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री श्री उमर अब्दुल्ला ने यह विचार व्यक्त किया। वे 2 से 10 जून, 2012 तक श्री प्रताप कॉलेज ग्राउंड्स, श्रीनगर में श्रीनगर पुस्तक मेला का उद्घाटन कर रहे थे। श्री अब्दुल्ला ने नेशनल बुक ट्रस्ट की सराहना करते हुए कहा कि ट्रस्ट विविध विषयों पर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय रुचि एवं महत्व की पुस्तकों का प्रकाशन कर पुस्तक एवं पठन आदत के प्रोन्नयन की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि श्रीनगर में पुस्तक मेला का आयोजन 20 लंबे वर्षों के अंतराल पर किया गया है। ट्रस्ट द्वारा आयोजित इस पुस्तक मेले की जम्मू-कश्मीर एकेडमी फॉर आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज तथा जम्मू-कश्मीर उर्दू एकेडमी सहयोगी संस्थाएँ थीं। पुस्तक मेले में लगभग 112 प्रकाशकों के 177 स्टॉल थे, जिसमें विविध क्षेत्रों एवं विषयों की पुस्तकें प्रदर्शित थीं।

घाटी के छात्रों एवं पुस्तकप्रेमियों के लिए इस पुस्तक मेले ने पुस्तकों के संसार का एक रौशन झरोखा खोला। वर्षों बाद लगे इस पुस्तक मेले को स्थानीय लोगों ने बड़े ही उत्साह से स्वागत किया और क्या आम और क्या खास, सभी पुस्तक मेले की ओर दौड़े चले आए। यहाँ तक कि राज्य के अनेक मंत्री भी यहाँ आए। इनमें शामिल थे, वित्त मंत्री श्री अब्दुल रहीम राथर, जम्मू-कश्मीर विधान परिषद के उपाध्यक्ष श्री एम वाई टेंग, सईद अली गीलानी, मीरवाइज उमर फारूक तथा मुहम्मद यासीन मलिक। घाटी में पुस्तकें लाने के ट्रस्ट के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए इन सभी का यह समवेत मत था कि घाटी के युवाओं को इस

अवसर का लाभ उठाना चाहिए और उन्हें पुस्तक मेला में आना चाहिए एवं पुस्तकें खरीदनी चाहिए। इन सभी महनुभावों का यह मानना था कि पठन-पाठन जीवन का एक महत्वपूर्ण आयाम होता है जो बेहतर कल के निर्माण में सहायता करता है।

पुस्तक मेले के दौरान अनेक साहित्यिक गतिविधियों ने बड़ी संख्या में आए आगंतुकों का ध्यान खींचा। इन गतिविधियों में शामिल थे–प्रो. मनोज दास एवं गुलाम नबी आतश जैसे सुविज्ञ लेखकों के साथ पाठकों का संवाद सत्र, महफिल-ए-ग़ज़ल, पैनल विमर्श तथा संगोष्ठियाँ। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए प्रो. मुहम्मद जमान आजुर्दा ने कश्मीरी भाषा के प्रोन्नयन पर जोर दिया। जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी द्वारा सआदत हसन मंटो पर आयोजित संगोष्ठी एक अन्य महत्वपूर्ण परिघटना रही। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक एवं कश्मीर यूनिवर्सिटी के पूर्व वीसी प्रो. हमीदी कश्मीरी ने की।

पुस्तक मेले पर अँग्रेजी दैनिक *कश्मीर राइजिंग* की टिप्पणी काबिलेगौर है : 'कश्मीर पढ़ रहा है। संघर्ष प्रभावित इस क्षेत्र के लिए यह एक अच्छा दृश्य है। किताबों की गंध घाटी में भर रही है। ने.बु.ट्र. द्वारा आयोजित इस पुस्तक मेले में युवाओं का जमघट और उनके द्वारा किताबें खरीदना इस गंध को केवल द्विगुणित कर रहा है।'

नई दिल्ली में पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा नई दिल्ली स्थित मुख्यालय के अपने भवन-परिसर में 2 से 28 जुलाई, 2012 तक चलने वाले चार सप्ताह के पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का अंकेक्षण के महानिदेशक श्री आर.एस. मथरानी, आईएएएस ने उद्घाटन किया। उद्घाटन-अवसर पर उन्होंने कहा, "मेरा सीधा-सा संदेश यह है कि हम प्रचार पर बहुत अधिक बल देते हैं, और यह प्रचार संप्रेषण के द्वारा होता है। किंतु हम पर यह बड़ी जिम्मेवारी है कि हमारा संप्रेषण इतना सरल और आसान हो कि लोगों को सहजता से समझ में आए।"

कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस के प्रबंध निदेशक श्री मानस सैकिया इस अवसर पर अतिथि वक्ता थे। उन्होंने भारत में पुस्तक एवं प्रकाशन उद्योग के डिजिटाइजेशन के परिदृश्य पर बातें कीं। उन्होंने कहा कि भारत में प्रकाशन उद्योग बहुत बड़ा है और देश के महत्वपूर्ण प्रकाशकों द्वारा अनेक लोगों को नौकरियाँ दी जा रही हैं। भारत में इस क्षेत्र में आगे भी प्रचुर संभावनाएँ हैं। उन्होंने विश्व बाजार में आ रहे प्रिंट ऑन डिमांड जैसे नए तकनीकों एवं साहित्यिक चोरी, विशेषकर अकादमिक पुस्तकों में, के खतरों के बारे में भी बातें कीं।

इससे पहले, ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने उपस्थित अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने जानकारी दी कि एनबीटी ने हाल ही में कलकत्ता यूनिवर्सिटी के सहयोग से पुस्तक प्रकाशन पाठ्यक्रम की शुरुआत की है और अगले 4-5 वर्षों में ट्रस्ट अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर पुस्तक प्रकाशन में और अधिक संयुक्त कार्यक्रमों की शुरुआत करेगा।

कार्यक्रम के अंत में ट्रस्ट में सहायक निदेशक (परियोजना एवं प्रशिक्षण) एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के समन्वयक श्री सुमित भट्टाचार्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के नवीनतम प्रकाशन

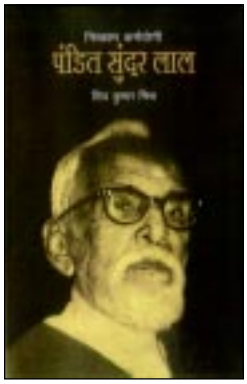

निष्काम कर्मयोगी पंडित सुंदर लाल

शिव कुमार मिश्र

पृ. 258 ` 135

'भारत में अँगरेजी राज' के लेखक, राष्ट्रवादी पत्रकारिता के अग्रदूत, प्रथम श्रेणी के राष्ट्रभक्त, सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक और विश्व शांति के उन्नायक कर्मवीर थे पंडित सुंदर लाल। उन्हीं की जीवनी पुस्तक है यह।

स्वामी सहजानंद सरस्वती

नीलांशु रंजन; पृ. 100 ` 60

स्वाधीनता आंदोलन और किसान आंदोलन में स्वामी जी की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। अपने मृदुल व्यवहार के कारण वे जनमानस में काफी लोकप्रिय थे। उनकी बातों का असर होता था। पत्रकार नीलांशु रंजन ने बड़ी सहजता से ऐसे उद्भट व्यक्तित्व को अपनी लेखनी से उकेरा है।

सोच

वेद राही

पृ. 146 ` 115

वेद राही के निबंधों का पहला संग्रह है। यह पुस्तक डोगरी भाषा में है।

छुट्टी...ना भाई ना...

डॉ. जसविंदर कौर बिंदरा; पृ. 16 ` 25

सूरज ने जब छुट्टी करने का मन बनाया और छिप गया तो सारे संसार का कामकाज ठप पड़ गया। फिर सूरज ने अपनी छुट्टी निरस्त कर दी तो संसार का सब कामकाज सामान्य हो गया।

झूठ का थैला

(क्रोएशिया की लोक कथाएँ)

गरिमा श्रीवास्तव

पृ. 72 ` 80

प्रस्तुत संग्रह की सात लोक कथाएँ संभवतया क्रोएशियन लोक कथाओं को हिंदी पाठकों तक पहुँचाने का पहला प्रयास है।

महीप सिंह : संकलित कहानियाँ

पृ. 238 ` 110

वरिष्ठ कथाकार महीप सिंह की 26 कहानियों का संग्रह है यह। इनकी कहानियों में मध्यवर्ग के व्यक्ति की आर्थिक मनोग्रंथियों का सूक्ष्म अंकन होता है। वे एक सचेतन कहानीकार हैं और सचेतन दृष्टि उनके कहानीकार का प्रस्थान बिंदु भी है।

परीक्षा-गुरु

श्रीनिवास दास; पृ. 174 ` 90

हिंदी साहित्य का प्रथम मौलिक साहित्य है यह। इसमें दिल्ली के एक कल्पित रईस लाला मदनमोहन का चित्र उतारा गया है। अपनी अय्याशी के कारण वह कंगाल होता है और जेल भी जाता है। इस उपन्यास की खास बात है कि उस समय दिल्ली में बोली जाने वाली आम भाषा का इस्तेमाल इसमें हुआ है। उपन्यास में लिपि तथा चिह्न आदि सभी मूल पुस्तक के अनुसार रखे गए हैं।

सारी दुनिया प्यारी दुनिया

जयंती मनोकरन; अनु. : पंकज चतुर्वेदी

पृ. 16 ` 25

इमें सूरज अच्छा लगता है लेकिन सूखा नहीं। इसी तरह, हवा, बारिश, नदियाँ, पहाड़, बर्फ, समुद्र अच्छे लगते हैं लेकिन बवंडर, तूफान, बाढ़, ज्वालामुखी, हिमस्खलन और सुनामी नहीं। इसी भावभूमि पर चित्रमय पुस्तक।

मटकू बोलता है

गोविंद शर्मा

पृ. 24 ` 30

न मटका, न मटकी, ये है मटकू, जो बोलता भी है। राहगीरों को ताकीद करता है—पहले हाथ धो लो, फिर पानी पीओ। रोचक शैली में लिखी संदेशपरक कहानी।

एक यात्रा

जगदीश जोशी (चित्र एवं कथा)

पृ. 24 ` 30

पुस्तक के एक पन्ने पर आ गिरे लार्वा ने उस पन्ने से ढेर सारी बातें पूछीं और नए-नए ज्ञान प्राप्त किए। एक रोचक कथा।

प्रतिलिप्यधिकार एवं प्रकाशन पर संगोष्ठी

पूरे विश्व में प्रकाशन उद्योग आज एक बड़ी क्रांति के मुहाने पर है, जहँ उद्योग के विशेषज्ञों का अनुमान है कि परंपरागत प्रकाशन व्यवसाय में, इसके सभी आयामों में, बड़ा परिवर्तन आया है। इस परिवर्तन का मुख्य कारक है 'तकनीक'। पाठक आज जिस तरीके से ज्ञान प्राप्त कर रहा है उसमें इस परिवर्तन को अच्छी तरह से देखा जा सकता है।

तकनीक ने न केवल पुस्तकों के उत्पादन और मुद्रण के तरीके को बदला है इसने अब अनिवार्य रूप से पुस्तक की उस अवधारणा को, जिसे अब हम जानते हैं, पुनर्परिभाषित किया है। इसने लेखकों को अपने पाठकों के साथ गहरे संबंध बनाने के लायक भी बनाया है। इसने हमारे पढ़ने के तरीके को बदला है। इंटरनेट, ई-बुक्स, सामग्री तक ऑनलाइन पहुँच, ई-रीडर्स के साथ-साथ स्मार्ट फोन–ये सभी मिलकर आज मुद्रित पुस्तकों की बिक्री में साफ-साफ कमी के कारण बने हैं। यह एक ऐसी चिंता बन गई है जिसने अब अधिकांश प्रकाशकों को घेर लिया है।

बड़े पैमाने पर पुस्तक उद्योग पर असर डालने के अलावा आमेजन और फ्लिपकार्ट जैसे पुस्तकों के ई-सेल्स पोर्टल्स के आश्चर्यजनक बढ़ोतरी ने पड़ोस के छोटे-बड़े पुस्तक की दुकानों पर भी असर डाला है।

प्रकाशन उद्योग का महत्वपूर्ण काम पठन, पुस्तकालय और ज्ञान तक पहुँच को प्रोन्नत करना है। लेकिन तकनीक में विकास के साथ प्रकाशन विशेषज्ञ दो प्राथमिक चिंताओं से दो-चार हो रहे हैं। पहली चिंता प्रकाशकों का लेखक एवं पाठक के बीच मध्यस्थ के रूप में भूमिका के घटते जाने का है। यह एक गंभीर विमर्श की माँग करता है जब हम जानते हैं कि ढाई लाख पुस्तकें ऑनलाइन स्वतः प्रकाशित की जा रही हैं। उनमें से अनेक, जिनकी अच्छी-खासी साइबर लोकप्रियता है, पुस्तकों को परंपरागत प्रकाशकों ने मुद्रित किया है। दूसरे, प्रकाशक वैकल्पिक व्यवसाय के तौर-तरीके की तलाश कर रहे हैं ताकि वे नई चुनौतियों का सामना कर सकें। इस संदर्भ में, वे मुफ्त सामग्री उपलब्ध कराने की संभावना पर भी विचार कर सकते हैं।

वास्तविकता तो यह है कि डिजिटल पुस्तकें कायम रहेंगी। इसे एक खतरे के रूप में देखने की बजाय यह आदर्श स्थिति होगी कि हम इसे सभी प्रकार के अधिक-से-अधिक पाठक बनाने के अवसर के रूप में देखें। ऐसे संकेत हैं कि आज पुस्तक पठन किसी भी समय की तुलना में अधिक लोकप्रिय है। लेकिन प्रकाशकों को यह देखना चाहिए कि पाठक पुस्तकों के किस रूप को पढ़ रहे हैं।

प्रकाशन उद्योग के एक अनुमान के अनुसार, 2011 में डिजिटल पुस्तकों से राजस्व प्राप्ति दुगनी रही, और युवा पाठकों के लिए डिजिटल पुस्तकों की बिक्री अचरज भरे 475 प्रतिशत तक बढ़ी!

डिजिटल पुस्तकों के आगमन से एक दूसरी चुनौती सामने आ गई है। इनमें अनुबंध पर हस्ताक्षर करने की वैधताएँ, एक प्रक्रिया जो लेखकों एवं अन्य स्टेक होल्डर्स के अधिकारों की रक्षा करता है, शामिल हैं। इस संदर्भ में, अनुबंध के एक संपूर्ण नए तरीके की तलाश, प्रतिलिप्यधिकार की रक्षा, ऑनलाइन प्रकाशन की बौद्धिक संपदा और डिजिटल वितरण, प्रकाशन का डिजिटल स्थानांतरण प्रकाशकों और वैधानिक विशेषज्ञों को समान रूप से है।

23-24 अप्रैल, 2012 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में MHRO, FIP तथा ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के सहयोग से WIPO तथा IRRO द्वारा आयोजित 'प्रतिलिप्यधिकार एवं प्रकाशन उद्योग' विषय पर दो-दिवसीय संगोष्ठी में इन मुद्दों और आयामों पर विचार-विमर्श किया गया। कार्यक्रम में भारत एवं विदेश के प्रकाशन उद्योग से जुड़े और वैधानिक विशेषज्ञों ने अपने विचार रखे।

संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में जिन विषयों पर चर्चा-विमर्श हुआ उनमें शामिल हैं : बौद्धिक संपदा और सृजनात्मक उद्योग, प्रतिलिप्यधिकार–अपवादें और सीमाएँ तथा ज्ञान तक पहुँच, पुस्तक प्रकाशन अनुबंध, ई-प्रकाशन, ऑनलाइन प्रकाशन एवं डिजिटल वितरण के बौद्धिक संपदा के अर्थ, प्रकाशन का डिजिटल स्थानांतरण एवं बदलते व्यावसायिक तरीके।

विभिन्न सत्रों के वक्ता थे : डोन्ना हिल, मानस सैकिया, सुधीर मल्होत्रा, जेंस बैमेल, जगदीश सागर, केविन फिट्जगेराल्ड, डॉ. रामन मित्तल, साई कृष्णा, संजीव गोस्वामी, ओलव स्ट्रोक्मो, एम्मा हाउस, क्रिस्टियन बी जोनासान, प्रवीण आनंद, एन.के. मेहरा, अरुण सिंह, मनीष अरोड़ा, विकास गुप्ता एवं प्रो. इंद्रनाथ चौधरी।

कोलकाता में साहित्य महोत्सव

विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस, 23 अप्रैल के अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने कोलकाता के फ्यूचर फाउंडेशन स्कूल, रीजेंट पार्क में 23 से 28 अप्रैल, 2012 तक एक सप्ताह तक चलने वाले बाल साहित्य महोत्सव का आयोजन किया। अपनी तरह के इस पहले महोत्सव के आयोजन के सहभागी थे, पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स गिल्ड तथा फ्यूचर फाउंडेशन स्कूल ऑफ श्री अरोबिंदो इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता। कोलकाता के विभिन्न स्कूलों के 5,000 से अधिक बच्चों और युवाओं ने इस महोत्सव में भाग लिया।

महोत्सव की शुरुआत प्रख्यात अभिनेता और वन्य जीवन के छायाकार श्री सब्यसाची चक्रवर्ती द्वारा 23 अप्रैल को पुस्तकों की प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुई। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री चक्रवर्ती ने बच्चों में वन्य जीवन के प्रति लगाव पैदा करने के लिए एक पुस्तक लिखने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने कहा, "मैं यह नहीं मानता कि युवा पीढ़ी पुस्तकों से पूर्णतः विमुख हो रही है। हमें जरूरत है उनकी सहायता करने की, ताकि वे आत्म अभिव्यक्ति के सृजन के जादू से स्वयं को जोड़ सकें।" पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स गिल्ड के महासचिव श्री त्रिदिब चटर्जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

महोत्सव के दौरान जहाँ 50 से अधिक प्रकाशकों ने पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई, वहीं दो दिवसीय सृजनात्मक लेखन एवं चित्र कार्यशाला का आयोजन भी हुआ। इसके अलावा, प्रख्यात लेखिका पारो आनंद के साथ एक अंतर्क्रियात्मक सत्र; पुस्तक समीक्षा कैसे करें, इस पर कार्यशाला तथा आज का बांग्ला बाल साहित्य पर पैनल विमर्श के आयोजन भी हुए। प्रख्यात बाल चित्रकार श्री देबाशीष घोष तथा सुश्री प्रिया नागराजन द्वारा पोस्टर डिजाइन पर कार्यशाला महोत्सव का एक खास आकर्षण रहा।

कार्यशाला में बच्चों द्वारा तैयार कलाकृतियों को गैलरी ला-मियरे में प्रदर्शित किया गया। कुछ चुनिंदा कलाकृतियों का ट्रस्ट के रीडर्स क्लब बुलेटिन में प्रकाशन भी किया गया।

श्री रंजन मित्तर, प्रिंसिपल तथा सुश्री वर्जीनिया रेड्डन, स्कूल की गतिविधि समन्वयक, ट्रस्ट में उप निदेशक (कला) श्री देबव्रत सरकार एवं रा.बा.सा.कें. के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र ने महोत्सव के विविध सत्रों का समन्वय-संचालन किया।

ट्रस्ट-निदेशक बाल साहित्य के एशियाई महोत्सव के सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर मार्च 2012 से दो वर्षों के लिए बाल साहित्य के एशियाई महोत्सव (AFCC) के सलाहकार समिति के सदस्य नियुक्त किए गए। उन्होंने देश का प्रतिनिधित्व करते हुए 29 मई, 2012 को सिंगापुर में आयोजित AFCC की सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।

बैठक में जिन और सदस्यों ने भाग लिया वे इन देशों से थे : सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, ब्रूनेई दारुस्सलाम, हाँगकाँग, फिलीपींस, इंडोनेशिया, जापान, मलेशिया तथा म्यानमार। बैठक के दौरान ट्रस्ट-निदेशक ने प्रस्ताव किया कि वर्ष 2014 में बाल साहित्य के एशियाई महोत्सव में भारत को धुरी राष्ट्र (फोकस कंट्री) बनाया जाए। श्री सिकंदर ने सिंगापुर में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.सी.ए. राघवन के साथ 30 मई को बैठक की तथा सिंगापुर में भारतीय पुस्तकों के प्रोन्नयन को लेकर उनसे विचार-विमर्श किया।

'उत्तराखंड की राजस्व पुलिस व्यवस्था' पुस्तक का लोकार्पण

''नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित व श्री देवेंद्र उपाध्याय द्वारा लिखी गई यह पुस्तक उत्तराखंड राज्य में भूमि सुधार के कार्यक्रमों के अतीत के साथ-साथ आगे का मार्गदर्शन भी करती है। यह पुस्तक इस दिशा में काम करने वालों के लिए उत्प्रेरक की तरह है।'' नई दिल्ली के चाणक्यपुरी स्थित उत्तराखंड भवन में आयोजित एक पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम में यह उद्‌गार केंद्रीय श्रम मंत्री श्री हरीश रावत ने व्यक्त किए। वे नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित व प्रख्यात पत्रकार देवेंद्र उपाध्याय द्वारा लिखी गई पुस्तक 'उत्तराखंड की राजस्व पुलिस व्यवस्था' के लोकार्पण समारोह में बोल रहे थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए बताया कि किस तरह ने.बु.ट्र. उत्तराखंड पर केंद्रित कुछ और पुस्तकों का प्रकाशन करने जा रहा है तथा इस राज्य के दूरस्थ अंचलों तक पुस्तकें पहुँचाने के लिए ट्रस्ट किस तरह विशेष प्रयास कर रहा है। उत्तराखंड पत्रकार परिषद के महासचिव श्री अवतार नेगी ने पुस्तक की समीक्षा करते हुए बताया कि कोई 180 साल पुरानी और देश में अपने तरीके की एकमात्र राजस्व पुलिस व्यवस्था 'मित्र-पुलिस' की अवधारणा का साकार रूप है। राजस्व पुलिस के कर्मचारी बगैर किसी वर्दी के आम लोगों की जमीन से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ कानून-व्यवस्था से जुड़े मसलों पर भी मित्रवत योगदान देते हैं। श्री नेगी ने इस पुस्तक के प्रकाशन को उत्तराखंड राज्य ही नहीं बल्कि देश के लिए बड़ी उपलब्धि निरूपित किया। लेखक श्री देवेंद्र उपाध्याय ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि किस तरह कुछ साल पहले श्री अनिल सिन्हा की प्रेरणा से उन्होंने इस विषय पर एक आलेख लिखा था और बाद में यह एक पुस्तक के रूप में सामने आया।

पुस्तक के लोकार्पण के बाद इस अवसर के मुख्य अतिथि व केंद्रीय मंत्री श्री हरीश रावत ने बेहद सहज शैली में बताया कि उत्तराखंड का भूमि-प्रबंधन बहुत पुराना है, लेकिन इसमें सुधार के कार्य अलग राज्य बनने के बाद अपेक्षित गति नहीं पा सके। श्री रावत ने उम्मीद जताई कि इस पुस्तक को उत्तराखंड के विकास के लिए काम कर रहे सभी लोग अवश्य पढ़ेंगे। मंत्री महोदय ने पुस्तक के कवर पेज की विशेष तौर पर तारीफ करते हुए अनुरोध किया कि इस पुस्तक को केंद्र में रखकर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम का संचाल नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के हिंदी संपादक पंकज चतुर्वेदी ने किया।

पुस्तक समीक्षा

नष्ट कुछ भी नहीं होता (कविता संग्रह)
प्रियदर्शन; पृ. 136 ` 200
राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

प्रियदर्शन मूलतः कवि न होते हुए भी जब कविता लिखते हैं तो उनके अंदर का पत्रकार एक सजग प्रहरी की तरह आस-पास कहीं खड़ा होता है। निजी अनुभव संसार से जो चीज निकालकर वे रखते हैं उसमें अपने समय, समाज और परिवेश की छाप और छायाएँ इर्द-गिर्द चिपकी होती हैं। मुक्त छंद में लिखी जाकर भी कविताओं में जो लय-ताल है वह पाठकों को बार-बार पढ़ने के लिए प्रेरित-उद्वेलित करती है।

बादलों के रंग, हवाओं के संग (निबंध)
अमरेंद्र किशोर; पृ. 398 ` 600
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-02

लोकज्ञान की परंपरा उतनी ही प्राचीन है जितना सभ्यता का इतिहास और संस्कृति की कहानी। यह पुस्तक भारत के इसी समृद्ध लोकज्ञान, उसकी कालातीत परंपरा और उनकी उपस्थिति का जीवंत दस्तावेज है। स्मृति, विश्वास और अनुभव की जमीन पर तैयार इस कृति को पढ़ने से जीने की चाह पैदा होती है। इसके पारायण से यथार्थ एवं कर्मकांड, तर्कसंगत ज्ञान और अंधविश्वास में फर्क की तमीज पैदा होती है।

लेडीज क्लब (उपन्यास)
नमिता सिंह; पृ. 224 ` 360
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

इस उपन्यास में भारतीय समाज की सांप्रदायिक राजनीति और तद्जनित हिंसा के वातावरण में तेजी से बदल रहे सामाजिक समीकरणों को देखा-समझा जा सकता है। अल्पसंख्यक समुदाय को केंद्र में रखकर लिखे गए इस उपन्यास में इस समुदाय के मानसिक और परिवेशगत बदलाव की अंतरंग पड़ताल भी है। आज के मनुष्यों में कुंद होती जा रही संवेदना को जगाने का एक उपक्रम-सा लगता है यह उपन्यास।

सुनो तो सही (स्त्री विमर्श); *रजनी गुप्त;* पृ. 192 ` 300
सामयिक बुक्स, 3320-21, जटवाड़ा, एन. एस. मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02

'आधी दुनिया' की अंधेरी दुनिया में झाँकते एक नई स्त्री की छवि को रचने की कोशिश है यह कृति। हस्तक्षेप, परख और संवाद के तीन खानों में बँटी स्त्री दुनिया के अंतरंग से साक्षात कराती है यह पुस्तक। आज की बाजारवादी ताकतों का प्रतिरोध करती है यह पुस्तक, जो स्त्री को महज एक 'देह' बना डालने के गंदे उपक्रम में लगी हैं। पुरुष सत्ता के पूर्वाग्रही बंद कानों तक आवाज पहुँचाने की कोशिश है *सुनो तो सही।*

ज्ञान गंगा (काव्य); *जे. के. डागर;* पृ. 126 ` 300
जूली पब्लिकेशंस, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23

कई बार मोटी-मोटी पुस्तक पढ़कर भी कोई प्रेरणा या संदेश नहीं मिल पाता, लेकिन महज दो पंक्तियाँ मनुष्य के विचार की दिशा बदल देती हैं। छंद में लिखे काव्य में वैसे भी संप्रेषण की क्षमता अधिक होती है। प्रस्तुत दोहों में जीवन-जगत की अनेक सच्चाइयाँ उद्घाटित हैं, जो पाठक को प्रेरित करेगा।

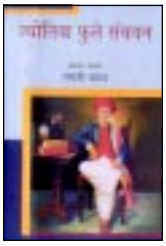

ज्योतिबा फुले संचयन (संचयन)
रामजी यादव; पृ. 448 ` 700
भारतीय पुस्तक परिषद, 175-सी, पॉकेट-ए, मयूर विहार, फेज-II, नई दिल्ली-91

19वीं सदी में ज्योतिबा फुले ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के दलित, पीड़ित, पिछड़े, अल्पसंख्यक और स्त्री के पक्ष में अपने विचार रखे थे। इस क्रम में उन्होंने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों एवं ब्राह्मणवाद पर कटु-कठोर प्रहार किए। स्थापित परंपरा और घिनौनी प्रथाओं के विरुद्ध उनका यही संघर्ष 20वीं सदी में दलित मुक्ति के संघर्ष का सोपान बना। दलित विमर्श के अध्येताओं के लिए जरूरी किताब।

मेरी प्रिय बाल कविताएँ
प्रकाश मनु; पृ. 200 ` 300
विद्यार्थी प्रकाशन, के-71, कृष्णा नगर, दिल्ली-51

प्रकाश मनु की बाल कविताएँ बच्चों को गुदगुदाती हैं, उन्हें रसानंद से सराबोर करती हैं। इन कविताओं में उपस्थित बच्चा आज की तेज भाग-दौड़ की दुनिया में अपने सपनों, मृदुल शैतानियों और चुलबुली नटखटपन को बचाकर रखा हुआ-सा प्रतीत होता है। इस कविताओं से गुजरना बच्चों की भोली दुनिया में बसे रंगों और सुगंधों और उमंगों से गुजरना है। फिर से बच्चा हो जाने का उपक्रम है यह बाल कविता संग्रह।

नाहक़ कोशिश (कविता संग्रह)
डॉ. रश्मि मल्होत्रा; ` 250
मंजुली प्रकाशन, आई-1/16, शांति मोहन हाउस, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02

द्विभाषी कविता संग्रह आज कोई नई घटना नहीं है। कई रचनाकारों के द्विभाषी संग्रह इन दिनों पुस्तक बाजार में हैं और पाठकों का प्यार भी उन्हें मिल रहा है। रश्मि मल्होत्रा का यह संग्रह उर्दू एवं हिंदी की गंगा-जमुनी तहजीब का एक जीवंत दस्तावेज-सा लगता है। इसे हिंदी वाले जितना अपना मानेंगे उतना ही उर्दू वाले भी।

रूबाइयाँ चमन (मुक्तक)
चतुर्भुज दास 'चमन'
पृ. 104 ` 100
मीनाक्षी प्रकाशन, एम.बी. 32/2बी, गली नं. 2, शकरपुर, दिल्ली-92

मुक्तक भी कविता ही है। इस मुक्तक में कवि का अनुभव संसार उभरकर आता दिखता है। चमन के मुक्तक में अपने समय और समाज के साथ ही देश और दुनिया को देखने-समझने की कोशिश भी है। इन मुक्तकों में संदेश है, प्रेरणा है और उद्घोष भी।

डॉ. आनंद के सात काव्य-संग्रह : एक अध्ययन
प्रेम गोपाल मित्तल (संपा.)
पृ. 608 ` 500
माडर्न पब्लिशिंग हाउस, 9, गोला मार्केट, दरियागंज, नई दिल्ली-02

इस पुस्तक में डॉ. आनंद का रचना-संसार झाँकता है। पहले लेखक के व्यक्तिगत एवं कलात्मक लेखों का संग्रह है। फिर संग्रहों से चयनित रचनाएँ हैं। और तब उनके सात काव्य संग्रहों पर चर्चा है। इन सभी संग्रहों से चयनित रचनाओं का समावेश है।

पूर्वाभिमुखीकरण कार्यक्रम

बच्चों में पठन आदत के प्रोन्नयन के लिए रीडर्स क्लब अभियान के लिए पूर्वाभिमुखीकरण कार्यक्रम का नई दिल्ली, बाराबंकी (उ.प्र.) तथा ऊना (हिमाचल प्रदेश) में आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में 250 से अधिक स्कूल प्रिंसिपल, शिक्षक तथा शिक्षा विभाग के स्थानीय इकाई के सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया। तीन जिलों के 210 स्कूलों में रीडर्स क्लब की स्थापना भी की गई।

इन कार्यक्रमों का उद्देश्य एक बच्चे के संपूर्ण विकास में पाठ्यपुस्तकों से इतर पुस्तकों के महत्व के बारे में जागरूकता का सृजन करना तथा नेबुट्र के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के सहयोग से किसी स्कूल में कैसे रीडर्स क्लब का संचालन किया जाए इस बारे में जानकारी देना था। कार्यक्रम की शुरुआत अभियान पर एक पावरप्वाइंट प्रस्तुति के साथ हुई, तत्पश्चात प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन हुआ। इसके बाद भागीदारों के लिए स्कूली बच्चों में पठन आदत के प्रोन्नयन, यथा बच्चों के लिए दीवार एवं हस्तलिखित पत्रिकाओं का निर्माण कैसे किया जाए तथा पुस्तकों एवं लेखकों पर आधारित क्विज आदि जैसी अनेक गतिविधियों का आयोजन किया गया।

ऐसे पहले कार्यक्रम का आयोजन 26 अप्रैल को म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन प्राइमरी स्कूल, सुभाष नगर, नई दिल्ली में रूम टू रीड के सहयोग से हुआ, जिसमें दिल्ली के 50 सरकारी प्राथमिक स्कूलों के प्रिंसिपल शामिल हुए। इस अवसर पर 50 स्कूलों में रीडर्स क्लब की स्थापना की गई। रूम टू रीड की कार्यक्रम अधिकारी सुश्री चंदर किरण ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दूसरा कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले में पुरेडेलिया में 30 मई को हुआ। इस अवसर पर लगभग 150 शिक्षक, प्रिंसिपल, पुस्तकालयाध्यक्ष तथा शिक्षा अधिकारी उपस्थित थे। जिले के 103 स्कूलों में रीडर्स क्लब की स्थापना की गई। एसआईईटी के लेक्चरर श्री हेमंत कुमार स्रोत व्यक्ति थे। पुरेडेलिया ब्लॉक के ब्लॉक शिक्षा अधिकारी श्री अजय विक्रम सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

तीसरे कार्यक्रम का आयोजन हिमाचल प्रदेश के ऊना में डिस्ट्रिक्ट इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (DIET) ऑफिस में 12 जून को किया गया। इसमें

शिक्षा से संबंधित 70 से अधिक व्यावसायिकों, जिनमें जिला प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा विभाग के उप निदेशक तथा DIET के प्रिंसिपल शामिल हुए। केंद्रीय विद्यालय के सेवानिवृत्त प्रिंसिपल तथा बाल लेखक श्री रामेश्वर काम्बोज स्रोत व्यक्ति थे। इस अवसर पर 57 स्कूलों में रीडर्स क्लब की स्थापना की गई।

ट्रस्ट में अँग्रेजी संपादक श्री द्विजेंद्र कुमार ने इन कार्यक्रमों का समन्वय किया।

श्रद्धांजलि

प्रख्यात कथाकार, बाल लेखक, संपादक एवं अनुवादक **अमर गोस्वामी** का 26 जून, 2012 को नई दिल्ली में निधन हो गया। उनका जन्म मुलतान के एक बांग्लाभाषी परिवार में 28 नवंबर, 1945 को हुआ था। मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में अध्यापन कार्य के बाद वे पत्रकारिता के क्षेत्र में आए, जहाँ अनेक पत्रिकाओं के संपादकीय पदों पर रहे। इनके लगभग 11 कहानी संग्रह, एक उपन्यास, 16 बाल कथा संग्रह और एक बाल उपन्यास प्रकाशित हैं। बांग्ला से हिंदी में 60 से अधिक अनूदित पुस्तकें भी प्रकाशित हैं। इन्हें हिंदी अकादमी सहित अनेक महत्वपूर्ण संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित किया गया था। अपने अंतिम दिनों में वे रेमाधव प्रकाशन गृह में मुख्य संपादक थे। नेशनल बुक ट्रस्ट से उनका गहरा लगाव रहा है। ट्रस्ट की पुस्तक 'सुदामा की मुक्ति' के वे लेखक थे।

वरिष्ठ कथाकार एवं संपादक **अरुण प्रकाश** का 18 जून, 2012 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 64 वर्ष के थे। उनकी प्रमुख रचनाओं में शामिल हैं : 'जलप्रांतर', 'मझधार किनारे', 'विषम राग', 'लाखों के बोल सहे', 'भइया एक्सप्रेस' (कहानी संग्रह), 'कोंपल कथा' (उपन्यास) और 'रात के बारे में' (काव्य संग्रह)। उन्होंने अँग्रेजी से हिंदी में कई पुस्तकों का अनुवाद भी किया। कुछ धारावाहिकों और वृत्तचित्रों के पटकथा लेखन से भी संबद्ध रहे और साहित्य अकादेमी की साहित्यिक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य' के संपादक रहे। उन्हें कई साहित्यिक पुरस्कार व सम्मान भी मिले थे। विदित हो कि अरुण प्रकाश का जन्म 18 जुलाई, 1948 को बिहार के बेगूसराय के नितनिया गाँव में हुआ था।

प्रख्यात हिंदी कवि एवं निबंधकार **भगवत रावत** का 26 मई, 2012 को भोपाल में निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। उनका जन्म जिला टीकमगढ़, म.प्र. में 13 सितंबर, 1039 को हुआ था। उन्हें दुष्यंत कुमार पुरस्कार, शिखर सम्मान समेत अनेक सम्मान प्राप्त हुए। उनकी कुछ प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं : 'देश एक राग है', 'समुंदर के बारे में', 'दी हुई दुनिया', 'हुआ कुछ इस तरह', 'सच पूछो तो', 'सुनो हीरामन' आदि। 'कविता का दूसरा पाठ और प्रसंग' उनकी आलोचना पुस्तक है।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/07/2012

तीन भाषाओं की सलाहकार समितियों की बैठकें

ओड़िआ भाषा के लिए पुनर्संगठित सलाहकार समिति की बैठक 17 जून, 2012 को भुवनेश्वर में संपन्न हुई। समिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने सदस्यों से ट्रस्ट के ओड़िआ प्रकाशन को समृद्ध करने के लिए नए विचार, प्रस्ताव और सुझाव देने का अनुरोध किया। बैठक की अध्यक्षता करते हुए ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष और लेखक डॉ. सीताकांत महापात्र ने ट्रस्ट की पुस्तकों के ओड़िआ के ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्रों में अधिक से अधिक पहुँचाने पर बल दिया।

बैठक में उपस्थित सदस्य थे : प्रो. दाशरथि दास, श्रीमती बीणापाणि मोहांति, प्रो. सौरिंद्र बारीक, प्रो. देबकांत मिश्रा, प्रो. विजय कुमार सत्पथी, डॉ. बिजोयानंद सिंह, डॉ. महेंद्र कुमार मिश्र, डॉ. प्रीतीश आचार्य, डॉ. महेश्वर मोहांति, श्री नरसिंह प्रसाद मिश्र। बैठक में ट्रस्ट के मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बद्दन भी उपस्थित थे।

उर्दू सलाहकार समिति की बैठक 28 मई, 2012 को नई दिल्ली स्थित ने. बु. ट्रस्ट मुख्यालय में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा ने की। सलाहकार समिति में शामिल थे–प्रो. एस.आर. किदवई, प्रो. इक़्तेदार आलम खाँ, प्रो. सोगरा मेहदी, प्रो. अख्तरुल वासे, डॉ. खलीफ अंजुम एवं श्री गुलाम हैदर।

तेलुगु सलाहकार समिति की बैठक 16 जून, 2012 को हैदराबाद में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता समिति के माननीय सदस्य प्रो. वकुलाबरानाम रामकृष्ण ने की। सलाहकार समिति में प्रो. रामकृष्ण के अलावा अन्य सदस्य थे–प्रो. एन. गोपी, डॉ. जे. बापूरेड्डी आईएएस, प्रो. अटलुरि मुरली, प्रो. मो. इकबाल अली, प्रो. आर. चंद्रशेखर रेड्डी, श्री तिलकापल्ली रवि। विशिष्ट आमंत्रित थे–डॉ. नलिमेला भास्कर, डी. अशोक कुमार एवं शीला वीरराजू। ट्रस्ट की ओर से निदेशक श्री एम.ए सिकंदर, मुख्य संपादक एवं संयुक्त निदेशक श्री बलदेव सिंह बद्दन तथा तेलुगु भाषा संपादक डॉ. पथिपका मोहन उपस्थित थे।

चिट्ठीघर

संवाद पत्र मिलते ही ऐसा लगता है मानो उत्कृष्ट साहित्य की परिचायिका आ गई। इस पत्रिका को पढ़कर देश का साहित्य जगत समृद्ध करने वाली पुस्तकों की प्रामाणिक जानकारी मिल जाती है। पुस्तक समीक्षा में नव्य प्रकाशित विविध विधा की कृतियों का परिचायात्मक विवरण वाकई सराहनीय है।

डॉ. सर्वेश कुमार 'सुयश', कानपुर, उ.प्र.

संवाद का मिलना, खुशियों का मिलना है। जून अंक बहुपयोगी, संग्रहणीय, विचारोत्तेजक लगा। नाइजीरिया, तेहरान, पुरी, मुंबई के पुस्तक मेलों, गतिविधियों की जानकारी रोचक लगी। प्रसन्नता हुई कि भारतीय साहित्य विदेशों में भी अपनी छाप छोड़ रहा है। अच्छा कागज, त्रुटिरहित मुद्रण, बहुरंगी प्रकाशन, जीवंत चित्र, कम शब्दों में असरदार विचार मन को भा गए। **संवाद** मोर पंख की तरह प्यारा लगा।

डॉ. राजन चौरसिया, सतना, म.प्र.

संवाद सदा आबाद रहे
प्रशंसा में कोई न विवाद रहे
देता रहे इसी तरह से सूचनाएँ
सदा मिलता जानकारियों का प्रसाद रहे।

प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

पाठक मंच बुलेटिन
बच्चों की द्विभाषी पत्रिका
वार्षिक शुल्क : ` 50.00

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070